पाठ 2

परमेश्वर के विषय सत्य क्या है?

इस पाठ में आप पढ़ेंगे

- परमेश्वर के विषय सत्य आपको क्यों जानना चाहिए?
- परमेश्वर के विषय सत्य आप कैसे जान सकते हैं?
- परमेश्वर कैसा है?
- परमेश्वर आपसे कैसी भक्ति चाहता है?

भाग 1

परमेश्वर के विषय सत्य आपको क्यों जानना चाहिए?

आवश्यक है आप परमेश्वर के विषय सत्य जानें:

इस कारण कि परमेश्वर कौन है

परमेश्वर विश्व का सृजनहार, शासक, और न्यायी है। चूँकि सृजनहार है, जो कुछ उसने सृजा, उसका स्वामी है। चूँकि शासक है अपने प्राणियों और विश्व के लिए नियम है। चूँकि न्यायी है हर व्यक्ति को आज्ञाकारी होने का इनाम देगा, या अनाज्ञाकारी होने का दण्ड देगा। चूँकि परमेश्वर आपका सृजनहार, शासक और न्यायी है, आवश्यक है उसके विषय सत्य जानें और वह आपसे क्या आशा करता है।

परमेश्वर प्रिय पिता भी है; वह सच्चा आनन्द आपको देता है। उसे आपको जानना चाहिए ताकि उसके प्रेम और आशीषों का आनन्द पाएँ।

इसलिए कि आपके जीवन या मृत्यु का प्रश्न है

परमेश्वर जीवनदाता है। वह उत्तम और भरपूरी का जीवन अभी देता है। मृत्यु के बाद सनातन और सिद्ध जीवन देगा।

याद कीजिए

यूहन्ना 17:3 और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें।

इसलिए कि परमेश्वर हमसे प्रसन्न हो, उसे जानना चाहिए

परमेश्वर की सन्तान उससे प्रेम करती है, उसकी इच्छा चाहती है। यीशु को मुक्तिदाता यदि मान लिया है, तो अब आप परमेश्वर के पुत्र हैं। अपने स्वर्गीय पिता को प्रतिदिन अतिनिकटता से जानिए। मालूम कीजिए वह चाहता क्या है ताकि अपने सभी कार्यों से प्रसन्न रख सकें। जीवन में तभी सच्चा सन्तोष पायेंगे। इसलिए आपको सृजा गया है आप वे ही कार्य करें जिनसे परमेश्वर प्रसन्न हो।

आपका काम

- **खाली स्थानों को भरें।**

  महत्त्वपूर्ण है कि मैं परमेश्वर के विषय सत्य जानूँ:

- **इसलिए कि.....परमेश्वर.....।**
- **इसलिए कि मेरे लिए.....या.....**
  .....का प्रश्न है।

- इसलिए कि परमेश्वर को .....
  मुझे उसको .....
- यूहन्ना 17:3 और .....यह है कि वे तुझ.....जिसे तूने भेजा है जानें।

भाग 2

परमेश्वर के विषय सत्य आप कैसे जान सकते हैं?

उसके कामों के द्वारा

किसी **व्यक्ति** के विषय आप उसके कामों द्वारा जान सकते हैं। जब **विश्व** पर दृष्टि करते हैं जिसे परमेश्वर ने सृजा, तो आपको अनुमान हो जाता है कि वह अतिबुद्धिमान और सामर्थी है।

रोमियों 1:20 "उसके अनदेखे गुण अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वर जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं।"

दूसरों के द्वारा

किसी मनुष्य का पूरा हाल, उनसे मालूम हो सकता है, जो उसे जानते हैं। जो जन **व्यक्तिगत** रूप से परमेश्वर को जानते थे। बाइबल में उनका सम्पूर्ण वर्णन है। उसने उनसे बातें कीं। उनकी समस्याएँ हल कीं। उनकी आवश्यकताएँ पूरी कीं। देह में उन्हें चंगाई दी। शक्ति और आनन्द दिया। परमेश्वर बदला नहीं है। हर महाद्वीप में हज़ारों व्यक्ति हैं जो परमेश्वर को जानते हैं। प्यार करते हैं वे आपको बता सकते हैं कि परमेश्वर कितना अद्‌भुत है।

1 यूहन्ना 1:3 "जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं। इसलिए कि तुम भी हमारे

साथ सहभागी हो : और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।"

उसके वचन के द्वारा

किसी व्यक्ति को आप उसकी लिखी पुस्तकों से और बातचीत से जान सकते हैं। परमेश्वर बाइबल के द्वारा आपसे बातचीत करता है। उसमें उसका चरित्र है। उसकी योजना और भावना है। आपके प्रति उसका प्रेम है।

यूहन्ना 5:39 "तुम पवित्र शास्त्र में ढूँढ़ते हो.....यह वही है जो मेरी गवाही देता है।

व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा

किसी **व्यक्ति** को आप तभी अच्छी तरह जान सकेंगे, जब आप उसके साथ रहें, बातचीत और कार्य करें। परमेश्वर की इच्छा थी कि हम उसे अच्छी तरह जानें। उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा ताकि मनुष्य के मध्य रहे। यीशु अपने पिता के समान है। उसमें आप परमेश्वर का स्वभाव देख सकते हैं। आप मसीह के द्वारा परमेश्वर को जान सकते हैं।

इब्रानियों 1:1-3. पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं।.....वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है।

यीशु को जब आप मुक्तिदाता मानेंगे, परमेश्वर को वह आप पर प्रगट करेगा। प्रार्थना में जब आप बात

करेंगे, उसका **वचन** पढ़ेंगे, तो उसकी उपस्थिति का अनुभव करेंगे। उसको भली-भाँति पहिचानेंगे, जिसकी आपको कल्पना भी न हुई होगी।

यूहन्ना 14:21,23... जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा। और मैं उससे प्रेम रखूँगा। और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा.....। "यदि कोई मुझसे प्रेम रखे तो वह मेरे **वचन** को मानेगा....हम उसके पास आएँगे और उसके साथ बात करेंगे।"

आपका काम

- **नीचे सूची में पाँच अच्छे उपाय हैं जिनके द्वारा परमेश्वर को पहिचान सकेंगे। एक उपाय ऐसा भी दिया गया है जो सहायक न होगा। उसके नीचे रेखा खींचें।**
- प्रकृति में उसके कार्य देखकर
- जो परमेश्वर को जानते हैं—उनके अनुभव सुनकर
- उसकी पुस्तक, बाइबल पढ़कर
- जो परमेश्वर को नहीं जानते उनके अनुभव सुनकर
- उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा
- व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना में परमेश्वर से बातचीत करके

भाग 3

परमेश्वर कैसा है?

परमेश्वर अनन्त, सनातन आत्मा है

परमेश्वर समय, दूरी और प्राकृतिक नियमों में सीमित नहीं है। जैसा कि हम हैं। उसका अस्तित्व सर्वदा

से है, सर्वदा तक रहेगा। वह सर्वव्यापी है। वह सर्वज्ञानी है। सब कुछ कर सकता है।

परमेश्वर एक में तीन व्यक्ति हैं

कुछ लोगों की धारणा है कि परमेश्वर व्यक्तित्व रहित शक्ति है। जो **विश्व** पर अधिकार जमाए है। या शुभकामों के लिए संयोग है। पर परमेश्वर एक व्यक्ति है। वह सोचता है। महसूस करता है। कार्य करता है। बाइबल स्पष्ट बताती है कि वह त्रिएक है। तीन व्यक्ति एक में हैं। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा स्वभाव, सामर्थ, और उद्देश्य में एक हैं। एक ही व्यक्ति एक ही परमेश्वर के रूप में, पूर्ण समानता से कार्य करते हैं।

मत्ती 28:19 "उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

परमेश्वर प्रेम है

परमेश्वर प्रेम है—उसका प्रेम का स्वभाव ही है। प्रत्येक से प्रेम करता है। आपसे प्रेम करता है। आपको सर्वोत्तम वरदान भी देना चाहता है। उसके तैयार किए निवास में स्वर्ग में आप सर्वदा तक रहें यही वह चाहता है।

1 यूहन्ना 4:8 "जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।"

परमेश्वर सिद्ध है

परमेश्वर प्रत्येक कार्य में उत्तम, पवित्र सत्य और सही है। वह उदार और कृपालं है।

मत्ती 5:48 "तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।"

ईश्वर न्यायी है

मनुष्यों की भलाई के लिए परमेश्वर ने **विशेष** नियम बनाये हैं। वह निष्पक्ष न्यायी है। अर्थ यह है कि वह हमेशा सही कार्य करता है। जो उसके नियमों का पालन करता है उन्हें **वरदान** देता है। जो उल्लंघन करता है उन्हें दण्ड देता है। वह हमको पापों से मुक्ति देता है। पर मुक्ति अस्वीकार करने वालों को उपयुक्त दण्ड देता है।

सभोपदेशक 12:14 "**क्योंकि** परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी न्याय करेगा।"

उत्पत्ति 18:25 क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करेगा?

परमेश्वर सर्वज्ञानी है

परमेश्वर भूत, वर्तमान और भविष्य जानता है। जो कुछ होता है उसे वह देखता, सुनता और जानता है। आपके विचार जानता है। अमुक काम आपने क्यों किया वह जानता है। आपके लिए क्या हितकर है वह जानता है। आपकी सहायता करता है ताकि आप सही फैसला कर सकें।

उत्पत्ति 16:13 यहोवा मेरा देखने हारा है।

1 यूहन्ना 3:20 परमेश्वर सब कुछ जानता है।

परमेश्वर सब कुछ कर सकता है

सृजनहार ने जगत में कुछ आदर्श बनाये हैं जिन्हें हम प्राकृतिक नियम कहते हैं। हर वस्तु इसी नियम पर

चलती है। परमेश्वर इन प्राकृतिक नियमों के ऊपर है, उनके आधीन नहीं। वह अलौकिक काम करता है। जिन्हें हम आश्चर्यकर्म कहते हैं। अर्थात् वे काम जो मनुष्य और प्रकृति की शक्ति के बाहर हैं।

यीशु जब पृथ्वी पर थे उन्होंने बहुत से आश्चर्य कर्म किये। उन्होंने रोगी चंगे किये, मृतक जिलाये, और जीवन बदले। प्रभु अभी भी महान वैद्य हैं। हमारी देह और आत्मा में चंगाई देकर वे हर्षित होते हैं।

मत्ती 19:26 परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।

निर्गमन 15:26 "मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं।"

आपका काम

- इस सूची में एक कथन गलत है। उसके नीचे रेखा खींचिये।
- परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और सहायता करना चाहता है।
- परमेश्वर निष्पक्ष न्यायी है जो पाप का दण्ड देता है।
- परमेश्वर **अव्यक्तिगत** प्रभाव है।
- परमेश्वर प्रत्येक वस्तु और स्थान को देखता और जानता है।
- **सोचिये :** क्या आप आनन्दित होते हैं या घबराते हैं यह जानकर कि परमेश्वर आपको देख रहा है? क्यों?

भाग 4

परमेश्वर आपसे कैसी भक्ति चाहता है?

भक्ति द्वारा दर्शाते हैं कि हम परमेश्वर का आदर, सम्मान और प्रेम करते हैं। जितनी भलाइयां कीं उनका धन्यवाद करते हैं। उससे बात करते हैं।

विभिन्न गिर्जों में अलग-अलग रूप से परमेश्वर की भक्ति करते हैं। वह आपसे कैसी भक्ति चाहता है? वह कैसे प्रसन्न होगा?

ईमानदार और निष्कपट हों

जो कहें वही करें। परमेश्वर पर आपका विश्वास होना चाहिए। उसकी आज्ञा मानना चाहिए।

यूहन्ना 4:24 परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसके भजन करने वाला आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

इब्रानियों 11:6 परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है : और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।

सिर्फ परमेश्वर की भक्ति करें

आपका सृजनहार ही सच्चा परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि आप किसी देवता, व्यक्ति, दुष्ट आत्माओं, मूर्तियों या पदार्थों की उपासना करें। जब आप उपासना करें तो वह नहीं चाहता कि मूर्ति का उपयोग करें।

निर्गमन 20:3 तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।

प्रेरित 14:15; 17:29 तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो। हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रुपये या पत्थर के समान है।

परमेश्वर का उसकी आशीषों के लिए धन्यवाद करें

भजनों, प्रार्थनाओं और मन में शांति से, परमेश्वर के प्रेम, भलाई और सब आशीषों के लिए धन्यवाद करें।

भजनसंहिता 81:1 परमेश्वर जो हमारा बल है उसका गीत आनन्द से गाओ।

भजनसंहिता 150:6 जितने प्राणी हैं सबके सब याह की स्तुति करें।

नम्रता और विश्वास से भक्ति करें

मान लें कि आप परमेश्वर के सामने आने के योग्य नहीं। पर यीशु को आपने मुक्तिदाता माना है सो परमेश्वर ने आपको क्षमा किया है। अपनी सन्तान बनाया है। निज पिता के समान पूरे मन से परमेश्वर से बात कीजिये।

आपका काम

- सोचें: क्या इस पाठ में बतायी गयी चार रीतियों के अनुसार मैं परमेश्वर की उपासना करता हूँ? क्या मैं इन्हीं रीतियों के अनुसार उपासना करूँगा?
- अपने ही शब्दों में प्रार्थना कीजिये। विनती करें कि वह स्वयं को आप पर प्रगट करे। उसकी उपासना करें।